MP Board Class 8th General English Notes Chapter 4 Trees: Our Saviours

Trees: Our Saviours Summary

1. The forests of the Himalayan region have played an important role in the life of the people of Uttarakhand. They have been supplying fodder for their cattle, wood for fuel, fruits for food and herbs for medical treatment. The forests have also prevented floods and soil erosion in the area during the monsoon season.

अनुवाद:
हिमालय क्षेत्र के जंगलों की उत्तराखण्ड के लोगों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है। वे उनके जानवरों के लिए चारा, ईंधन के लिए लकड़ी, भोजन के लिए फल और चिकित्सा के लिए जड़ी-बूटियाँ प्रदान करते हैं। वन बरसात के मौसम में बाढ़ और भूमि क्षरण से इस क्षेत्र का बचाव भी करते हैं।

2. During the 1970's, however deforestation began. Trees were cut down. As a result, there was nothing to hold the soil. The rushing rain water carried away not only the soil, but also huge rocks, causing landslides, filling up the rivers, leading to floods. Further owing to the forest trees being taken away, the people who depended on them for food and fuel, faced great difficulty. They had to walk longer distances to collect firewood for cooking, plants for food and medicines, and to graze their cattle.

अनुवाद:
उन्नीस सौ सत्तर के दशक में जंगलों की कटाई आरम्भ हुई। वृक्षों को काटा गया था। परिणामस्वरूप मृदा को क्षरण से रोकने को कुछ नहीं था। तेज बहते हुए वर्षा का जल अपने साथ केवल मिट्टी ही नहीं बल्कि विशाल चट्टानें ले जाता था जिससे भूस्खलन होता था और इनसे नदियाँ भर जाने पर बाढ़ आ जाती थी। इसके अतिरिक्त जंगल से

पेड़ों को हटाने से, लोग जो भोजन और ईंधन के लिए उन पर निर्भर थे, उन्होंने बड़ी परेशानी का सामना किया। उन्हें खाना पकाने के लिए लकड़ी, भोजन एवं दवाइयों के लिए पौधे इकट्ठा करने और अपने पशुओं को चराने दूर-दूर तक जाना पड़ता था।

3. The people were angry but helpless. They
did not know what they, the simple villagers,
could do to stop the destruction of their
forests. For a long time rich forests had been destroyed by the contractors. One morning in March 1973, a group of people from a factory that made railway goods arrived at the village of Gopeshwar, in Chamoli district of Uttarakhand. They had come to cut the ash trees. The wood was to be used to make sleepers for the railways in the plains. The villagers requested the axe men to go back, but they refused to return. The people decided that they would not let the axes touch the trees, no matter what happened. They said,

अनुवाद:
लोग क्रुद्ध थे परन्तु असहाय थे। वे नहीं जानते थे कि वे, साधारण ग्रामीण, अपने वनों का विनाश रोकने के लिए क्या करें। एक लम्बे अर्से से समृद्ध वनों को ठेकेदारों द्वारा नष्ट किया जा रहा था। मार्च, 1973 की एक सुबह, उत्तराखण्ड के चमोली जिले के गोपेश्वर गाँव में रेलवे कोच बनाने वाले एक कारखाने के लोगों का एक समूह आया। वे मोहिन वृक्षों को काटने आये थे। लकड़ी का प्रयोग मैदानी क्षेत्रों में रेल्वे के लिए स्लीपर बनाने में किया जाना था। ग्रामीणों ने पेड़ काटने वालों से वापस जाने की प्रार्थना की परन्तु उन्होंने वापस जाने से मना कर दिया। लोगों ने तब यह तय किया कि चाहे जो हो जाए वह कुल्हाड़ियों को उन वृक्षों को छूने नहीं देंगे। उन्होंने कहा,

4. “Let us save our precious trees. Let us hug them so that no one can reach them.” And they all rushed forward shouting, “Chipko Chipko.” The axe men were frightened by the turn the situation had taken and they ran away. The people had succeeded in saving their trees Thus began the movement called “Chipko” or. “Hug the Trees”. It was a non-violent movement of the mountain people to save their trees by hugging them.

अनुवाद:
आओ, अपने मूल्यवान पेड़ों को बचाएँ। आओ उनसे लिपट जाएँ जिससे कोई उन तक नहीं पहुँच सके। . . .. और वे सभी ‘चिपको-चिपको’ चिल्लाते हुए आगे की ओर दौड़े। स्थिति को बदलता देख वृक्षों को काटने आये लोग भयभीत हो गए और वे भाग गए। लोग अपने वृक्षों को ब ने में सफल हो गए। इस प्रकार ‘चिपको’ या वृक्षों को गले लगाओ’ आन्दोलन आरम्भ हो गया। यह पहाड़ी लोगों का अपने वृक्षों को गले लगाकर उन्हें बचाने के लिए एक अहिंसावादी आन्दोलन था।

5. The villagers of Gopeshwar had saved its trees but the contractors were not going to give up easily. They chose another forest which was about 60 kilometers away from Gopeshwar. News of this reached Gopeshwar. So the entire village men and women, old and young, began to march in a procession. They carried drums and trumpets and banners with messages like –

“Chop me – not the tree.”
and
“Kill us first, before you cut a single tree.”

अनुवाद:
गोपेश्वर के ग्रामीणों ने अपने वृक्षों को बचा लिया था परन्तु ठेकेदार भी आसानी से छोड़ने वाले नहीं थे। उन्होंने दूसरा जंगल चुन लिया जो गोपेश्वर से लगभग 60 किमी. दूर था। यह समाचार गोपेश्वर पहुँचा। तब सम्पूर्ण गाँववासी-पुरुष एवं स्त्रियाँ, वृद्ध एवं युवा एक जुलूस में आगे बढ़ने लगे। वे ढोल और तुरही बजाते हुए चल रहे थे तथा हाथों से इसमें सन्देश की । तख्तियाँ लिए हुए थे –
“मुझे काटो-पेड़ को नहीं”
और
“हमें पहले मारो, इससे पहले कि तुम एक भी पेड़ काटो।”

https://www.evidyarthi.in/

6. The axe men could not raise their axes. They
fled. The “Chipko” idea had once again won.
Trees had been saved. The message began to
sweep through the region. The people knew that if they could save their forest, the forest would save for them their soil, their water and their livelihood. Many such incidents took place. Over the years the people’s movement became well known all over India and abroad. Thus, people have come together to work to protect their forests.

अनुवाद:
कुल्हाड़ी लिए लोग अपनी कुल्हाड़ी को नहीं उठा सके। वे भाग गए। ‘चिपको’ विचार ने एक बार पुनः विजय प्राप्त की। वृक्षों को बचा लिया गया। पूरे क्षेत्र में सन्देश फैल गया। लोगों को समझ आ गया कि यदि वे अपने वनों को बचा सके तो वन उनके लिए उनकी मिट्टी, जल और जीविका को बचाएँगे। ऐसी कई घटनाएँ घटित हुईं। कालान्तर में यह जनान्दोलन पूरे भारत और विश्व में प्रसिद्ध हो गया। इस प्रकार लोग अपने जंगलों की रक्षा करने के लिए काम करने को एक साथ आ गये।

7. They have organised themselves especially the women through organisations such as the Dasohli. Gram Swarajya Mandal to regenerate the degraded forests. This is how the Chipko movement has proved very valuable in the conservation of forests. It has taught an important lesson to the people in the conservation of the forests.

अनुवाद:
उन्होंने मृत वनों को पुनर्जीवित करने के लिए दसोहली ग्राम स्वराज्य मण्डल जैसे, कई संगठनों के माध्यम से – स्वयं को संगठित किया, विशेष रूप से महिलाओं से। इस प्रकार चिपको आन्दोलन वनों के संरक्षण में बहुत मूल्यवान सिद्ध हुआ है। इसने वनों के संरक्षण में लोगों को एक . महत्वपूर्ण सबक सिखाया है।